Vol 3 Issue 10 April 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-10 | April-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

ग्रामीण औद्योगीकरण – आवश्यकता एवं संभावनाएँ

ज्योति जैन
शोधार्थी , षासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

प्रस्तावना–

गांव भारतीय सामाजिक व्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग है। गाँवों की सुख–समृद्धि पर ही सम्पूर्ण देश की प्रगति निर्भर करती है। आज भी देश की तीन चौथाई जनसंख्या मुख्य रूप से कृषि व पशुपालन द्वारा जीवन यापन करती है। बडी संख्या में ग्रामीण भूमिहीनों के कारण गांवों में अत्यधिक निर्धनता है। गांवों में सुविधाओं व साधनों की कमी के कारण शिक्षित ग्रामीण शहरों की ओर पलायन कर जाते है। रोजगार की तलाश में भूमिहीन कृषि श्रमिक भी गांव छोड़कर शहर में आ बसते है। इन परिस्थितियों को देखते हुए गांवों में ही रोजगार के अवसर उत्पन्न करने की आवश्यकता है। इसमें ग्रामीण औद्योगीकरण अत्यंत कारगर सिद्ध हो सकता है। वास्तव में कृषि उद्योग गांवों की जरूरत है।

गांवों के संसाधनों का उपयोग गांवों की तरक्की के लिए ही होना चाहिए। जो गांव सबका पेट भरते है, संसाधनों के बाहर चले जाने के कारण वे ही भूखे रह जाते है। ग्रामीण उद्योगों के माध्यम से ग्रामीण संसाधनों का समुचित उपयोग होने से गांवों के विकास के नए रास्ते खुलेगें। कृषि जनित उत्पादों का उपयोग ग्रामीण उद्योगों के माध्यम से भली भांति किया जा सकता है, जिससे किसानों को उनकी फसल का पूरा दाम मिलेगा और गांवों में रोजगार के साधन बढेंगे। गांवो की खुशहाली के लिए ग्रामीण उद्योगों की स्थापना और उनका विस्तार जरूरी है। गांवों में इन उद्योगों के लिए कच्चा माल और जन–शक्ति बहुतायत से सुलभ है। ग्रामीण उ़द्योगों द्वारा ही इनका सही उपयोग संभव है।

ग्रामीण औद्योगीकरण की रूपरेखा – भारत की आर्थिक समस्या मुख्य रूप से ग्रामीण विकास की समस्या है। गांवों में उद्योगों के लिए आधारभूत सुविधाओं का होना जरूरी है अन्यथा ग्रामीण उद्योगों की सफलता संदिग्ध रह सकती है। उद्योगों के लिए यातायात, संचार, बिजली, पानी जैसी मूलभूत आवश्यकताओं को सुलभ कराना पहले जरूरी होता है। अतः गांवों को औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित करने के लिए पहले उन्हें सडकों से जोडना जरूरी है, वहां ऊर्जा के स्त्रोत के रूप में बिजली पहुँचाना नितान्त आवश्यक है। वे सभ साधन व सुविधाएँ गांवों में उपलब्ध होनी चाहिए जिनकी आवश्यकता उद्योगों के लिए समय–समय पर होती है। वित्त की सुविधा के लिए सहकारी वित्तीय संस्थाओं की स्थापना गांवों में औद्योगीकरण विकास के साथ–साथ आवश्यक संसाधनों का प्रवाह स्वतः ही गांवों की ओर होने लगता है। बस उद्योगों की रोशनी गांवों को दिखाने की आवश्यकता है।

ग्रामीण औद्योगीकरण गांवों को स्वावलम्बी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ग्रामीण उद्योग मुख्य रूप से कृषि उपज पर निर्भर करते है। इनके द्वारा कृषि से प्राप्त कच्चे माल से प्रक्रिया द्वारा उपयोगी पदार्थो का उत्पादन किया जाता है। ग्रामीण उद्योगों की सूची में प्रमुख रूप से चीनी मिल, गुड, खाण्डसारी उद्योग, दाल मिल, तेल मिल, कपास एवं जूट उ़द्योग, बेकरी, फल संरक्षण उद्योग, डेयरी उ़द्योग आदि को सम्मिलित किया जा सकता है। इन सभी उद्योगों का कच्चे माल की उपलब्धता को ध्यान में रख कर ग्रामीण क्षेत्रों में चलाना सब दृष्टियों से लाभप्रद है। ग्रामीण क्षेत्र ही इन उद्योगों के लिए उपयुक्त स्थल है।

गांवों में औद्योगिक इकाईयों का आकार सुविधानुसार छोटा–बडा हो सकता है। इन औद्योगिक इकाईयों का संचालन पूंजी–प्रधान न होकर श्रम प्रधान होना चाहिए। इससे जनसंख्या के बडे भाग को रोजगार प्राप्त हो सकता है। स्वचालित मशीनें लोगों से उनका रोजगार छीनती है। गांवों में श्रम की कमी नही है। अतः ऐसे उद्योगों को लगाना चाहिए जिसमें गांवों के अधिक–से–अधिक लोगों को रोजगार मिल सके। महात्मा गांधी ने कहा था कि, भारत का मोक्ष उसके कुटीर उद्योग धन्धों में निहित है। गांधीजी ऐसी औद्योगिक तकनीक के हिमायती थे जिनमे निम्नलिखित गुण होने चाहिए।

1.इसमें स्थानीय वस्तुओं का प्रयोग होना चाहिए।
2.यह अधिक रोजगारपरक होनी चाहिए।
3.इसका उद्देश्य जनसंख्या के पलायन पर रोक होना चाहिए।
4.इसमें जनसाधारण द्वारा जन–साधारण के लिए उत्पादन होना चाहिए।

ज्योति जैन , "*ग्रामीण औद्योगीकरण – आवश्यकता एवं संभावनाएँ*", Golden Research Thoughts | Volume 3 | Issue 10 | April 2014 | Online & Print

5.उत्पादन व संगठन प्रक्रिया सरल होनी चाहिए।

ग्रामीण उद्योग श्रम सघन होते है तथा उनमें गांवों की उपज कच्चे माल के रूप में प्रयोग होती है। इनसे बेरोजगारी की समस्या कम होती है। इनसे गांवों की आत्मनिर्भरता बढती है और शहरों पर निर्भरता कम होती है। ग्रामीणों का जीवन स्तर सुरधता है और उनमें आत्मविश्वास पैदा होता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए ग्रामीण औद्योगीकरण अत्यंत आवश्यक है। तभी गांवों को उत्थान हो सकता है और ग्रामीण को आर्थिक लाभ व सामाजिक न्याय मिल सकता है।

ग्रामीण औद्योगीकरण की वर्तमान स्थिति – स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद औद्योगिक विकास पर तो ध्यान दिया गया किंतु यह विकास सन्तुलित विकास नहीं कहा जा सकता। गांवों में उद्योगों के विकास के प्रयत्न नगण्य रहे। यहां तक की बडे उद्योगों के विकास ने गांवों के लघु व कुटीर उद्योगों को हतोत्साहित किया। बडे उद्योगों की उत्पादों की प्रतियोगिता में ग्रामोद्योग के उत्पाद नही टिक सके और बहुत–सी ग्रामीण औद्योगिक इकाईयाँ बन्द हो गई।

गांवों में रोजगार की दृष्टि से समय–समय पर अनेक कार्यक्रम चलाए गए जिनमें काम के बदले अनाज कार्यक्रम, समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम, ग्रामीण रोजगार गारण्टी कार्यक्रम, ट्राइसेम, मनरेगा आदि प्रमुख है। इन कार्यक्रमों से ग्रामीणों को स्थायी–अस्थायी रोजगार तो अवश्य मिला किंतु गांवों के विकास का स्थायी समाधान नही मिल सका। ग्रामीण औद्योगीकरण का विचार ही एक मात्र ऐसा समाधान है, जिससे गांवों की कायापलट सकती है – इसमें रोजगार की पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान है, कृषि व ग्राम विकास का निश्चित हल भी है। ग्रामीण औद्योगीकरण कृषि के साथ मिल कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढता प्रदान कर सकते है।

वर्तमान में देश के ग्रामीण विकास में कृषि उ़द्योगों की स्थापना का उत्तरदायित्व विभिन्न सरकारी संगठनों एवं स्वायत्त संस्थाओं को सौंपा गया है। खादी और ग्रामोद्योग आयोग देश में गुड़, खांडसारी, अनाज और दाल प्रशोधन, तेल, रेशा, शहद, हाथकागज, मोम, फल संरक्षण आदि परम्परागत कृषि–उद्योगों के विकास का कार्य करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में लघु एवं घरेलू कृषि – उद्योगों तथा इनके सहायक उद्योगों के विकास के लिए ग्रामीण उद्योग परियोजना तथा जिला उद्योग केन्द्र स्थापित किए गए है। ये संस्थाएँ इन उद्योगों की स्थापना हेतु लोगों को वित्तीय सहायता तथा तकनीकी परामर्श प्रदान करने के साथ–साथ इन उद्योगों के लिए स्थान – निरूपण एवं बाजार की उत्तम व्यवस्था भी करते है।

इस सबके बार भी ग्रामीण उद्योगों की स्थिति देश में बहुत कमजोर रही है। इसके मुख्य कारण यह है कि, ग्रामीण उद्योगों पर खर्च बहुत कम किया गया है जबकि बड़े उद्योगों पर, जिनमें रोजगार दिए जाने की संभावनाएँ बहुत सीमित है, यह खर्च काफी बढ़ा है।

ग्रामीण औद्योगीकरण के लाभ – गाँवों में उद्योगों के विकास की पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान है। कृषि – उद्योग तो ग्रामीण क्षेत्रों में ही ठीक प्रकार से फल–फूल सकते है। गाँवों के परिवर्तित परिवेश में बेरोजगार ग्रामीण गांवों में औद्योगिकरण की सतत प्रतीक्षा कर रहे है। ग्रामीण औद्योगीकरण जिन दृष्टिकोणों से अत्यंत लाभदायक है उनमें से कुछ इस प्रकार है :–

1.ग्रामीण औद्योगीकरण गांवों और शहरों के बीच सन्तुलित विकास की कड़ी बनता है। भूमिहीन निर्धनों को भी ग्रामोद्योग के माध्यम से ऊपर उठने का अवसरा मिलता है।
2.ग्रामीण उद्योग श्रम सघन होने के कारण ग्रामीणों को बड़ी संख्या में रोजगार प्रदान करते है। इससे बेरोजगारी समाप्त होती है।
3.ग्रामीण औद्योगीकरण से गांवों का आर्थिक विकास होता है जिससे नगरों जैसी सुविधाएँ गांवो में सुलभ होने लगती है। इनसे गांवों की जनसंख्या का शहरों की ओर होने वाला पलायन रूक जाता है।
4.कृषि उपजों का गांवों में ही कच्चे माल के रूप में प्रयोग होने से फसल की अच्छी कीमत मिलती है। इससे कृषि का भी विकास होता है।
5.ग्रामीणों की आय में वृद्धि होने से उनके जीवन स्तर में सुधार होता है। उनमें आत्म निर्भरता की भावना उत्पन्न होती है। ग्रामोउद्योगों में लगे ग्रामीण गांव के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं।
6.ग्रामीण औद्योगीकरण के कारण गांवों के संसाधन गांवो के विकास में लगते है।
7.ग्राम उद्योगों में ग्रामीणों के व्यस्त होने से अपराध व संघर्षो में कमी आती है। लोग अपने व गांव के विकास के लिए प्रयत्नशील बनते है।
8.ग्रामीण उद्योगों के द्वारा गांव देश के विकास में अधिक योगदान करने में सक्षम होते है।
9.ग्रामीण औद्योगीकरण से गांवों का चहुंमुखी विकास होता है। सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक सभी क्षेत्रों में श्रेष्ठ मूल्यों की स्थापना होती है।
10.गांवों में उद्योगों के विकास से कृषि – श्रमिक सामन्ती शोषण से मुक्त हो जाते है क्योंकि उद्योगों में उनको जीवन यापन का सहारा मिल जाता है।
11.गांवो की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है। साधनों का प्रवाह शहरों में गांव की ओर होने लगता है।

उपर्युक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए इस बात की आवश्यकता है कि, ग्रामीण औद्योगीकरण विकास की एक नई व्यावहारिक योजना तैयार की जाए और उसे पूरी निष्ठा व ईमानदारी के साथ लागू किया जाए, जिससे गांव खुशहाल बन जाए। बहुत से ग्रामीण लोग गांवों में औद्योगीकरण विकास के पक्ष में नहीं रहते। उनका मानना है कि, औद्योगीकरण से गांवों का सामाजिक वातावरण दूषित हो जाता है। लाभों की तुलना में ये दोष नगण्य है। वास्तव में ग्रामीण औद्योगीकरण वर्तमान और भविष्य के लिए आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1.सांख्यिकी पुस्तक (वार्षिक) – जिला सांख्यिकी कार्यालय, इन्दौर 2011–12
2.एन.सी.डी.सी. बुलेटिन – नेषनल कोपरेटिव डेव्हलपमेंट कॉर्पोरेषनस, नई दिल्ली 2008
3.मध्य प्रदेष पर्यावरण – पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन, भोपाल
4.मध्य प्रदेष शासन राजपत्र – भोपाल

5.कुरुक्षेत्र (मासिक) – प्रकाषन सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली
6.आविष्कार (मासिक) – नेषनल रिसर्च डेव्हलपमेंट कार्पोरेषन, नई दिल्ली

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org